eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)

A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL

Volume 04, Issue 05, May 2025

भारतीय समाज एवं उच्च शिक्षा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

हेमलता[1]

[2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डी0जी0 पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

इतिहास का अध्ययन एक तार्किक कालक्रमानुसार ही किया जाता है और यही नियम भारतीय शिक्षा प्रणाली को समझने के क्रम में रखना आवश्यक है। हमारे देश की शिक्षा प्रणाली का गौरवमयी इतिहास रहा है साथ ही यह अति प्राचीन है। सामान्यतः इसे हमें तीन भागों में विभाजित करना चाहिए— प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल। प्राचीन काल से वर्तमान युग तक भारतीय शिक्षा प्रणाली की यात्रा को समझे बगैर हम इसके महत्व को नहीं समझ सकते।

प्राचीन काल (वैदिक, बौद्धकाल) की शिक्षा प्रणाली के अध्ययन में— संगठन व संरचना, उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, शिक्षार्थी, अनुशासन, शिक्षक, विधियाँ, प्रशासन वित्त एवं शिक्षा के अन्य पक्ष सम्मिलित हैं। इसी प्रकार मुगल काल एवं आधुनिक काल का भी क्रमवार अध्ययन अपने इस लेख में हम करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयोग, संभावनायें, विकास, नवीन प्रयोग, नीतियाँ, आयोग व समितियां, सुझाव इत्यादि के अध्ययन को विशेष तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया गया है— यथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षक शिक्षा एवं स्त्री शिक्षा आदि।

प्रस्तुत लेख में वर्णन किया गया है कि जहाँ प्राचीन बौद्धिक परम्परा किस प्रकार अन्वेषण, जिज्ञासा व परीक्षण की भाषा से परिपूर्ण थी एवं कैसे आज भी यह देश के गौरव व सांस्कृतिक गौरव की भावना को जीवंत किए हुए हैं। हम यहाँ भारत सरकार के सरकारी आंकड़ों का प्रयोग विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु करेंगे। प्रस्तुत लेख में आधुनिक शिक्षा में हो रहे परिवर्तन एवं समस्याओं का भी जिक्र किया गया है, साथ ही आधुनिक शिक्षा में तकनीक कितनी मददगार है जो हमारे बच्चों, युवाओं, वयस्कों एवं प्रौढ़ों को लाभान्वित कर रही है क्योंकि शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं है।

हाल ही में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा अक्टूबर 2020 में, भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई के एस) नामक प्रभाग की स्थापना की गयी है जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करके बढ़ावा देना है। इन प्रयासों द्वारा हमारी संस्कृति ने एक बार पुनः भारतीय परम्परा पर गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है। उच्च शिक्षण संस्थानों (आई आई टी) में नवाचार एवं अनुसंधान हेतु भारतीय ज्ञान प्रणालियों को प्रोत्साहित करते हुए उत्कृष्टता केन्द्रों की स्थापना की गयी है जिसका उद्देश्य है पारम्परिक ज्ञान को नवीन शिक्षा प्रणाली में प्रयोग करके शिक्षा को समाज हेतु अधिक उपयोगी बनाना।

मुख्य शब्द—इतिहास, तार्किक क्रम, शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, अनुसन्धान।

Introduction

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली की विकास यात्रा का क्रमबद्ध एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। प्राचीन से लेकर आधुनिक युग तक के समयान्तरालों में शिक्षा विधियों में परिवर्तन होते

रहे हैं, जिनका उद्देश्य एक ही रहा है व्यक्तित्व विकास समानता एवं सद्भावना की विचारधारा का निर्माण एवं एकता एवं अखण्डता का सन्देश समाज को प्रेषित करना। प्राचीन काल, मध्य काल एवं स्वतंत्रताकाल की शिक्षा पद्धति को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। कोई भी समाज शिक्षा के अभाव में सभ्य नहीं बन सकता। अंग्रेजी का 'एजुकेशन' (Education) शब्द लैटिन भाषा के 'एडूकेटम' (Educatum) शब्द से मिलकर बना है जिसमें 'ई' (E) का अर्थ 'अन्दर से बाहर की ओर' और 'डुको' (duco) का अर्थ है 'आगे बढ़ना'।

शिक्षा का अर्थ **'औपचारिक'** एवं **'अनौपचारिक'** दोनों ही रूपों में भिन्न–भिन्न है। **'औपचारिक शिक्षा'** को स्कूल एवं कॉलेजों के निश्चित पाठ्यक्रम तक ही सीमित मान लिया जाता है जिसके माध्यम से हम आर्थिकी रूप से स्वयं को सक्षम बनाते हैं एवं समाज को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग कर पाते हैं। वहीं बात अगर **'अनौपचारिक शिक्षा'** की हो तो इसका कोई निश्चित दायरा नहीं है, यह तो जीवन पर्यन्त जीवन के प्रत्येक क्षण ही मानव कुछ न कुछ सीखता है स्वयं में सुधार करता है अथवा अपना व्यक्तित्व निर्माण कर पाता है अर्थात् इस प्रकार की शिक्षा का व्यावहारिक जीवन में अति महत्व है।

प्रस्तुत लेख में हम भारतीय शिक्षा के इतिहास एवं समयान्तराल पर उसमें होने वाले परिवर्तन एवं विकास के बारे में क्रमबद्ध रूप में बात करेंगे।

यह बात सभी मानते हैं कि भारतीय वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद) संसार के प्राचीनतम ज्ञान कोश हैं जिनके द्वारा तत्कालीन समाज के बारे में हमें महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। जर्मन विद्वान (Education) **मैक्समूलर** द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि वेदों की रचना का सही कालक्रम क्या है एवं उनके रचनाकर्ता कौन थे? उनके अनुसार सर्वाधिक प्राचीन वेद ऋग्वेद है। इसी क्रम में **लोकमान्य तिलक** एवं **पद्मश्री डॉ0 वाकणकर** ने भी शोध कार्य किए हैं।

अंग्रेज विद्वान एफ0डब्लू0 थॉमस के अनुसार 'ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में प्रारम्भ हुआ हो जितना भारत में हुआ है।' ('There has been no country except India where the love of learning had so early an origin' – F.W. Thomas)

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली थी एवं वह वैदिक धर्म एवं दर्शन पर आधारित थी। कुछ विद्वानों द्वारा इसको ब्राह्मणीय शिक्षा प्रणाली जबकि कुछ अन्य द्वारा हिन्दू शिक्षा प्रणाली कहा गया, किन्तु विचारपूर्वक कहा जा सकता है कि यह 'वैदिक शिक्षा प्रणाली' थी।

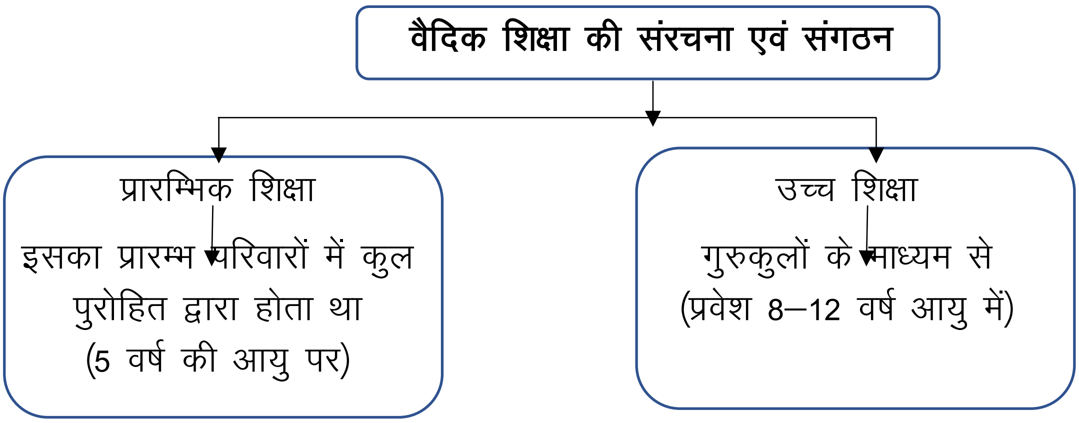

EISSN 2583-6986

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

वैदिक कालीन शिक्षा का सर्वप्रमुख उद्देश्य 'ज्ञान का विकास' था। 'ज्ञान' को मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता था जो दृश्य और सूक्ष्म दोनों जगत का कार्य करता था, 'शिक्षा' का व्यापक अर्थ में प्रयोग मानव में अनुशासन, विनय, विद्या, ज्येष्ठजनों का आदर सम्मान, समाजोनुकूल व्यवहार इत्यादि सीखने हेतु किया जाता था। हमारा देश पारम्परिक एवं धार्मिक मान्यताओं को मानने वाला देश रहा है।

यहाँ परिवार ही मानव की प्राथमिक पाठशाला रहे हैं, जिसका जिक्र प्रसिद्ध समाजशास्त्री 'कूले' द्वारा भी किया गया है। **'विद्यारम्भ संस्कार'** परिवार द्वारा बालक के 5वें आयु में कराया जाता था, जबकि उच्च शिक्षा हेतु जब बालक (8–12 आयु वर्ग) में प्रवेश करता था तब **'उपनयन संस्कार'** द्वारा विभिन्न विषयों में शिक्षा दी जाती थी, साथ ही कला–कौशल का भी प्रशिक्षण दिया जाता था ताकि बालक **व्यावहारिक** जीवन में कठिनाई अनुभव न करे। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त **'समावर्तन समारोह'** होता था, जिसमें गुरु शिष्यों को जीवन भर स्वाध्याय द्वारा शिक्षा में अद्यतन ज्ञान की प्राप्ति करने का आशीर्वाद देते थे।

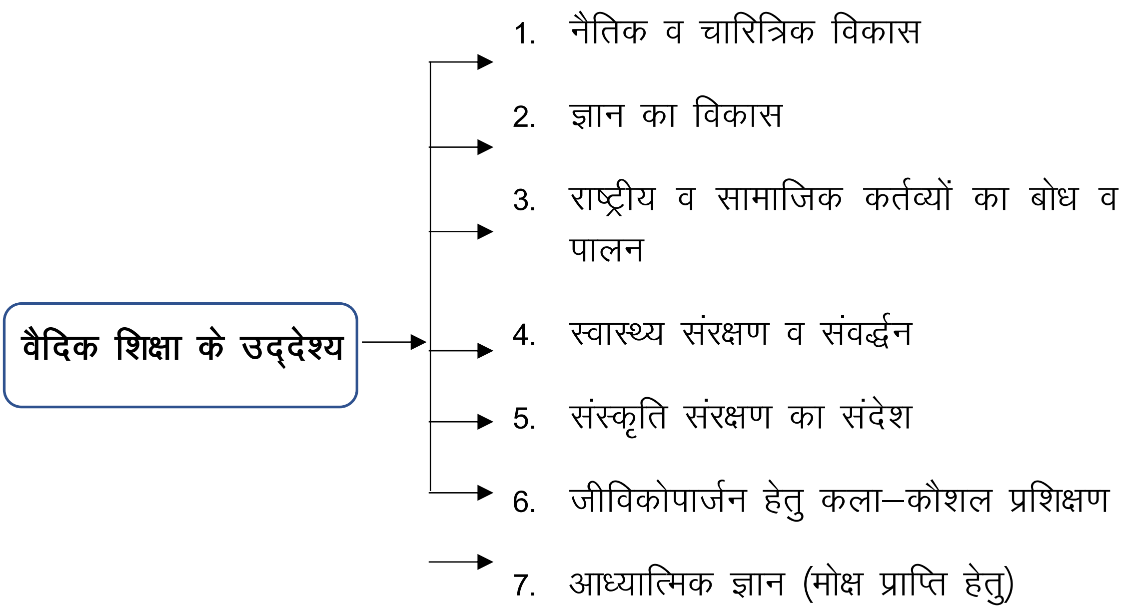

वैदिक काल में शिक्षण मुख्यतः मौखिक रूप से होता था जिसका माध्यम अधिकांशतः वाद–विवाद, प्रश्नोत्तर अथवा शंका समाधान था। उपनिषदकारों द्वारा श्रवण तर्क विधि मनन एवं निदिध्यासन विधियों का विकास शिक्षा हेतु किया गया था। भाषा को समझने हेतु अनुकरण विधि का एवं कला–कौशल को अभ्यास द्वारा अथवा प्रदर्शन के प्रयोग द्वारा समझा जा सकता था। अथर्ववेद का एक सूत्र उद्धरणीय है–

'वाचस्यते देवन सह। वसोस्यते न रमयः'।। अर्थात् गुरु, शिष्य को पूर्ण मनोयोग से पढ़ाए कि उसमें रमणीयता रहे। वैदिक काल में उच्च शिक्षा हेतु विशुद्ध संस्कृत का प्रयोग किया जाता था। उत्तर वैदिक काल में गुरुकुलों की संख्या बढ़ने पर प्रखर बुद्धि योग्य और ब्राह्मण वर्ण के वरिष्ठ छात्रों का 'नायक' का दर्जा दिया जाता था जिनका कार्य ब्राह्मण वर्ण के छात्रों को भाषा, साहित्य, नीतिशास्त्र, धर्म इत्यादि के विषय में अवगत कराते थे।

छात्र जीवन कठोर अनुशासन के लिए प्रतिबद्ध था जिसका अर्थ था मानसिक, शारीरिक और आत्मिक संयम। उत्तर वैदिक काल में गुरुओं की आज्ञा की अवहेलना करने पर शिष्यों हेतु दण्ड का भी प्रावधान था। मनु, विष्णु शर्मा और गौतम तो शारीरिक दण्ड देने के पक्ष में ही नहीं थे जबकि याज्ञवल्क्य द्वारा विशेष

परिस्थितियों में ऐसा करने की स्वीकृति दी है। वैदिक कालीन गुरु–शिष्य सम्बन्ध में प्रेम और श्रद्धा का मेल होता था।

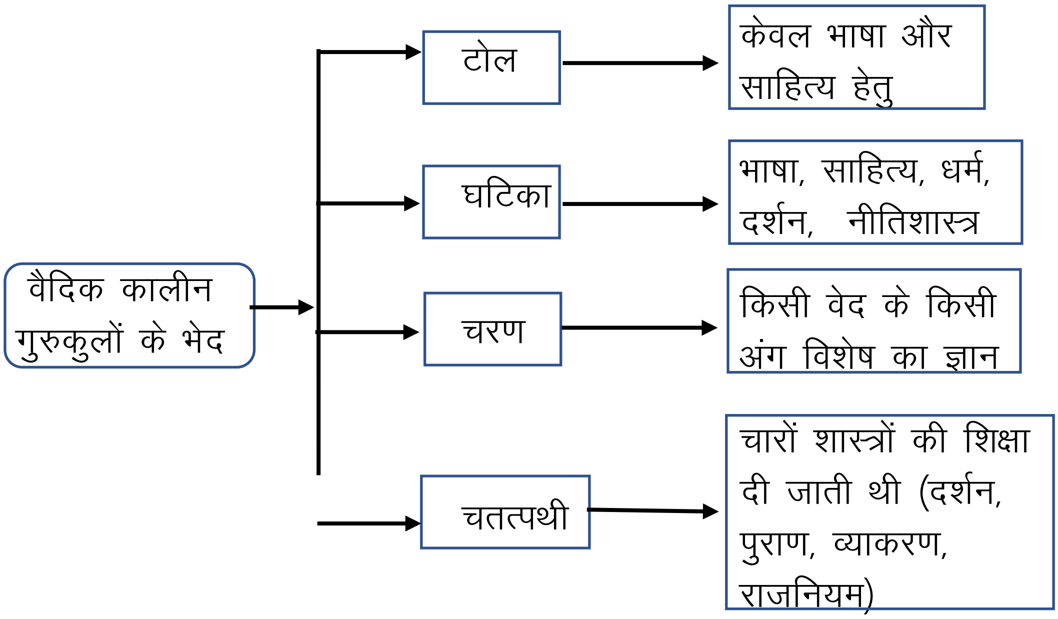

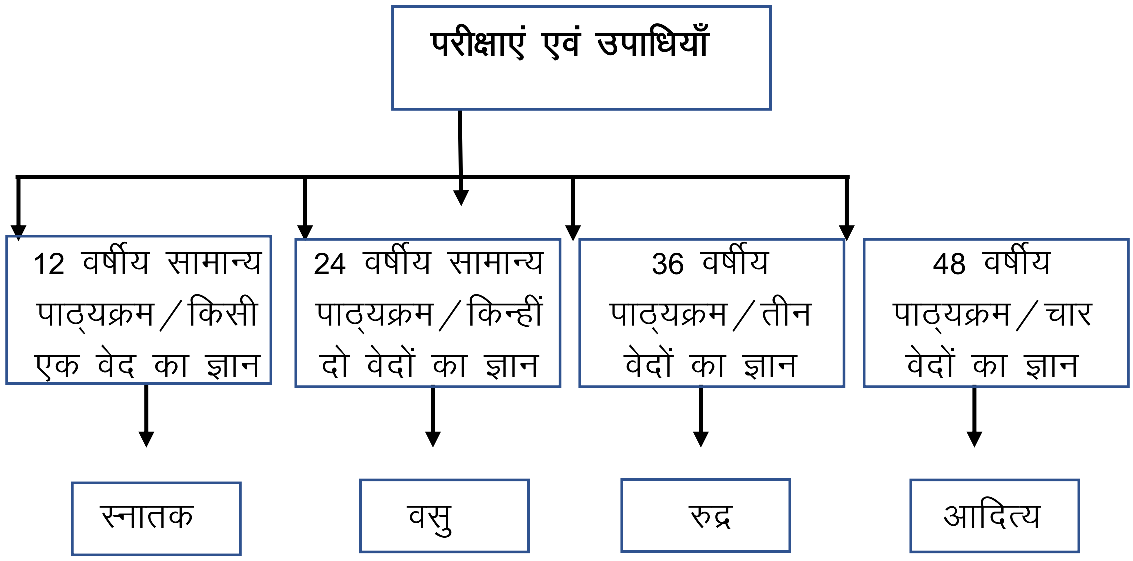

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति का समान अधिकार था जबकि उत्तर वैदिक काल में वर्णानुसार ही शिक्षा दी जाती थी जैसे शूद्र वर्ण की स्त्री को उच्च शिक्षा का अधिकार नहीं था। सामान्य घरों की बेटियां उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती थीं क्योंकि लड़कियों हेतु पृथक गुरुकुलों की व्यवस्था नहीं थी। राजघरानों अथवा राजदरबार के उच्च अधिकारियों की पुत्रियाँ ही उच्च शिक्षा ग्रहण कर पाती थीं। घोषा, अपाला, विश्वारा, होमशा, गार्गी और शाश्वती जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख तो हमें मिलता है किन्तु स्त्री शिक्षा सामान्यतः उपेक्षित ही रही है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

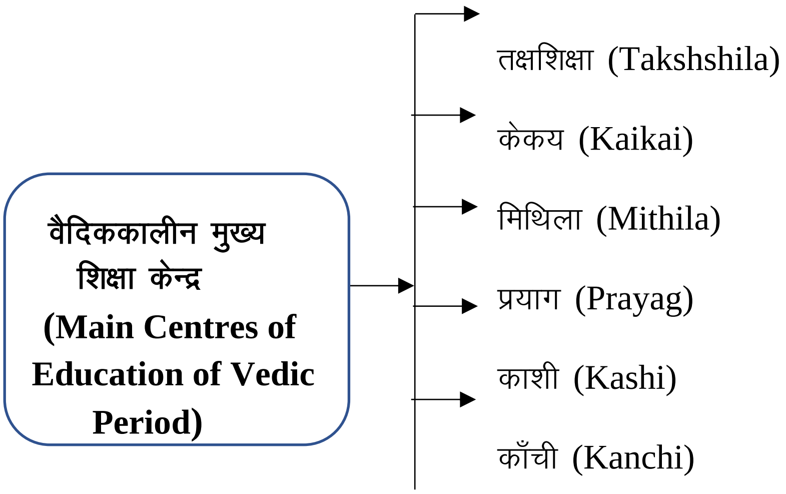

ये प्राचीन शिक्षा ही थी जिसने खगोलशास्त्र, गणित, दर्शन, नीतिशास्त्र के साथ ही वैज्ञानिक सोच से विश्व को अवगत कराया। 5वीं शताब्दी के गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री **'आर्यभट्ट'** द्वारा शून्य एवं दशमलव प्रणाली का ज्ञान देकर इस ओर अन्य प्रयोगों हेतु भी दिशा दी। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, यह आर्यभट्ट द्वारा ही बताया जाना आश्चर्यचकित करता है। इसी प्रकार चिकित्सा क्षेत्र में हम **'पतंजलि'** जो कि आयुर्वेदाचार्य थे जिन्होंने योगसूत्र नामक पुस्तक लिखी थी एवं 'योग' की महत्ता से समाज को अवगत कराया। यह उनका ही मार्गदर्शन था कि वर्तमान युग के गुरु रामदेव अथवा वी0के0 अयंगार, स्वामी शिवानंद, श्रीश्री रविशंकर, महर्षि योगी हों अथवा स्वामी विवेकानन्द हों जिन्होंने देश विदेश में 'योग' को लोकप्रिय बनाया। इसी क्रम में हम चरक, सुश्रुत इत्यादि चिकित्सकों का भी स्मरण करते हैं जिन्होंने मानव शरीर रचना (Anatomy) और औषधि विज्ञान के विषय में बहुमूल्य जानकारी दी है।

प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणविद् **'पाणिनी'** द्वारा 'अष्टाध्यायी' विकसित की जो कि भाषा विज्ञान पर एक अद्वितीय व व्यापक ग्रंथ है। 'भरतमुनि' का नाट्यशास्त्र जो भारतीय प्राचीन विरासत जैसे मूर्तिकला, मंदिर, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत एवं नृत्य व नाटक से जुड़े हुए ज्ञान कोश का महत्वपूर्ण साधन है जिसके आधार पर कला के क्षेत्र में अनेकानेक शोध हो चुके हैं एवं आज भी इस दिशा में प्रगति जारी है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली का व्यापक असर हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर हुआ है जिससे हम आज भी लाभान्वित हो रहे हैं। अन्य विषयों की चर्चा हम आगे अन्य विषयों के साथ करेंगे। चूँकि शिक्षा एक अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है जो हमें औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप में लाभान्वित करती है। यह प्रत्येक काल और परिस्थितियों में अपने परिवर्तित रूपों के साथ समाज में सदैव ही उपस्थित रही है। अब हम अपने क्रमबद्ध अध्ययन में मध्यकालीन मुस्लिम समाज में शिक्षा की स्थिति क्या था इसके बारे में बात करेंगे।

प्राचीन काल से ही भारतभूमि विदेशी शासकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्रमुख नाम **साइरस** (538—530 ई0पू0), **सिकन्दर** (मैसोडोनिया, यूनान), **हूण** अरब ईरान रहे हैं। 12वीं शताब्दी में अफगान बादशाह मुहम्मद गौरी, को हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान द्वारा तराइन के मैदान में परास्त किया गया किन्तु जाते—जाते वह अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक का शासक बन गया (गुलामवंश)। इसके उपरान्त खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश, लोदी वंश और मुगल वंश का शासन रहा। औरंगजेब (1659—1707 ई0) के काल में ही मुगलवंश का वैभव समाप्ति की ओर था। भारत इसीलिए विविधताओं में एकताओं का देश रहा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

है क्योंकि यहाँ पर जो भी आक्रमणकारी आये अपने साथ अपनी संस्कृति एवं शिक्षा भी लाए। इनका उद्देश्य प्रारम्भ से ही भारतीय शिक्षा और संस्कृति को तहस–नहस करना एवं इस्लाम धर्म औरसंस्कृति का व्यापक स्तर पर बलपूर्वक प्रसार करना रहा था।

कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा उस समय के शिक्षा के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों – नालन्दा और विक्रमशिला को नष्ट करवा दिया गया था, शिक्षकों को मार डाला गया एवं पुस्तकालयों को जला दिया गया। ऐसा इन्होंने अन्य केन्द्रों पर भी किया किन्तु वैदिक शिक्षा हमारी संस्कृति से जुड़ी थी, हमारे जीने का माध्यम थी इसलिए वैदिक संस्कृति को ये कट्टर मुस्लिम समाप्त नहीं कर पाये।

मुस्लिम शिक्षा का अर्थ संकुचित था जो कि केवल मकतब एवं मदरसों में दी जाने वाली शिक्षा से था। मुस्लिम शिक्षा भी दो स्तरों में विभाजित थीं– प्राथमिक व उच्च स्तर में। उच्च शिक्षा के अन्तर्गत कुरानशरीफ, इस्लामी इतिहास, सूफी एवं शरीअत कानून के बारे में बताया जाता था, लेकिन अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, विभिन्न कला कौशलों और व्यवसायों की भी शिक्षा दी जाती थी। 'अकबर' एक उदारवादी बादशाह था, वह सभी धर्मों की इज्जत करता था। उसने 'धार्मिक सहिष्णुता' की नीति अपनायी थी। उसके काल में कुछ मदरसों में वैदिक धर्म–दर्शन, संस्कृत भाषा व वैदिक साहित्य की भी शिक्षा व्यवस्था की गयी।

मकतबों में प्राथमिक शिक्षा के लिए लड़के–लड़कियों दोनों को ही मौका दिया जाता था, किन्तु उच्च शिक्षा लड़कों तक ही सीमित थी। शहजादियों अथवा उच्च पदों के व्यक्तियों की बच्चियों की शिक्षा का प्रबन्ध व्यक्तिगत रूप में किया जाता था। इस काल में भी अनेक विदुषी महिलायें हुई हैं जैसे बाबर की बेटी गुलबदन बेगम एक लेखिका थी जिसने 'बाबरनामा' पुस्तक लिखी। नूरजहाँ, मुमताज महल, जहांआरा एवं हुमायूं की भतीजी सलीमा सुल्तान, अरबी व फारसी की विदुषी स्त्रियां थी। इसी प्रकार रजिया बेगम और चांदबीबी का नाम आज भी इतिहास में कुशल शासिका के रूप में लिया जाता है। इसी क्रम में औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा, अरबी और फारसी की अच्छी कवयित्री के रूप में जानी जाती है किन्तु यह सब राजघरानरों के उदाहरण हैं जबकि आम महिलायें मुगल काल अथवा मुस्लिम शासन में शिक्षा से वंचित ही रहीं।

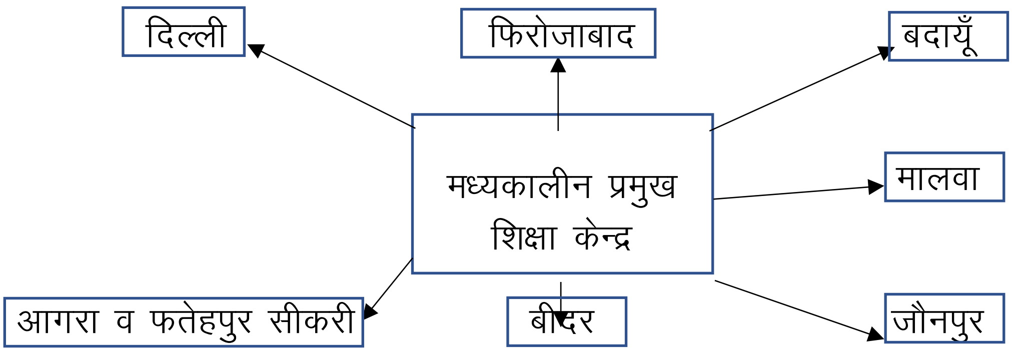

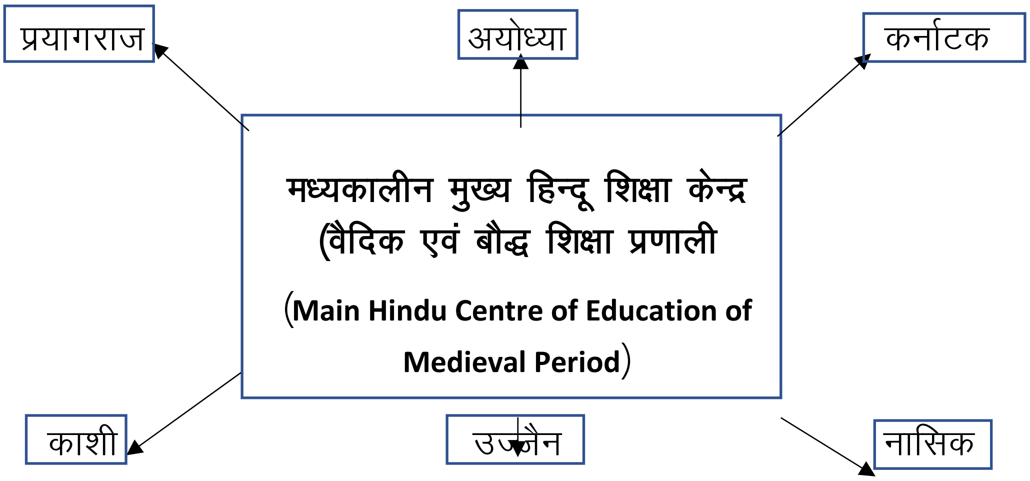

मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के गुण :

(Merits of Medieval Education System)

- निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था
- छात्रवृत्तियों का शुभारम्भ
- प्राथमिक व उच्च शिक्षा की अलग–अलग व्यवस्था
- ज्ञान के विकास पर बल
- शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्राप्त
- नायकीय पद्धति का विकास
- साहित्य रचना को प्रोत्साहन
- ज्ञान के विकास पर बल
- व्यावसायिक एवं कला–कौशल से सम्बन्धित शिक्षा की व्यवस्था

मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के दोष :

(Demerits of Medieval Education System)

- तत्कालीन भारतीय शिक्षा पर प्रहार
- शिक्षा का मूल ध्येय इस्लाम धर्म और संस्कृति का प्रचार व प्रसार
- भारतीय भाषाओं, साहित्य, धर्म और दर्शन की अवहेलना करना।
- हिन्दू शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता में पक्षपात
- रटने पर अधिक बल
- दमनात्मक अनुशासन (कठोर दण्ड का चलन)
- जन शिक्षा की अवहेलना– (मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी भाषा पर आधारित थी)
- स्त्री शिक्षा की अवहेलना
- धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा से अर्थ मात्र इस्लाम धर्म की शिक्षा थी जो कि एक संकुचित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती थी।

आधुनिक शिक्षा पर भी मुस्लिम शिक्षा का प्रभाव अवश्य ही पड़ा है।। आज भी देश भर में मदरसे व

मकतब चल रहे हैं जहाँ अरबी, फारसी व कुरान की शिक्षा दी जाती है। हमने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को राज्य की जिम्मेदारी माना है जिसमें समय–समय पर सुधार किये जाते रहे हैं जैसे निर्धन, अनाथ छात्रों को छात्रवृत्ति उपलब्ध कराना अथवा 2009 में संविधान में जोड़ा गया 'शिक्षा का अधिकार' (अनुच्छेद 21क) भी शामिल है। आज व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है लेकिन मुस्लिम शिक्षा के दोषों को भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में नहीं अपनाया गया है, जैसे–धर्म विशेष की शिक्षा देना, संकीर्ण पाठ्यक्रम, आर्थिक सहायता में पक्षपात करना, शिक्षा का विदेशी माध्यम इत्यादि कुछ ऐसे नियम हैं जिन्हें 'अनेकता में एकता' पर विश्वास करने वाले भारत जैसे देश में नकार दिया गया है।

15वीं शताब्दी के अन्त तक **वास्कोडिगामा** (पुर्तगाली नाविक) द्वारा यूरोप से भारत आने वाले समुद्री मार्ग की खोज की एवं 1510 से 100 वर्षों तक व्यापार के क्षेत्र में एकछत्र राज रहा। तत्पश्चात् अंग्रेज, डच, फ्रान्सीसी एवं डेन व्यापारियों का आगमन हुआ। जब तक हमारे देश में ब्रिटिश शासन रहा ईसाई मिशनरियों द्वारा शिक्षा के माध्यम से अपने धर्म का प्रचार व प्रसार जारी रहा था और चौकाने वाला तथ्य यह है कि हमारे देश में विदेशी शिक्षा संस्थाएँ व ईसाई धर्म की शिक्षाएं वर्तमान में भी जारी हैं। इनका उद्देश्य आज कुछ भी हो किन्तु ये उत्तम श्रेणी की शिक्षा संस्थायें हैं एवं आकर्षण का केन्द्र हैं।

चार्टर एक्ट (Charter Act, 1793) के द्वारा यह निर्णय लिया गया कि भारतीय जनता को पाश्चात्य शिक्षा व नवीन विचारधाराओं से परिचित कराने एवं धार्मिक, नैतिक शिक्षा के उत्थान हेतु कार्य किया जाए।

अंग्रेजी शासन की नींव मजबूत करने हेतु कम्पनी को अपने शासन व व्यापारिक कार्यों को करने हेतु अंग्रेजी भाषा के जानकारों की आवश्यकता थी। परिणामतः अनेक उच्च शिक्षण संस्थायें खोली गईं 1781 में कलकत्ता मदरसा, 1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज और 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गयी। इन सभी शिक्षण संस्थाओं में स्थानीय शिक्षा के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा और साहित्य का उच्च स्तर का ज्ञान एवं साथ ही अंकगणित, रेखागणित, तर्कशास्त्र, नक्षत्रशास्त्र और दर्शनशास्त्र की शिक्षा भी सम्मिलित थी। फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता का जिक्र विशेष उल्लेखनीय है जिसकी स्थापना 1800 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड वैलेजली (Lord Wellesly) द्वारा की गई। यहाँ पर शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दी जाती थी जहाँ हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई, विशेष रूप से असैनिक कर्मचारियों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते थे। डॉ0 केरे (Carey) एवं कोलब्रुक (Colebrook) के साथ ही पं0 ईश्वरचन्द्र विद्यासागर भी यहाँ के शिक्षक के रूप में नियुक्त किए गए थे। इस कॉलेज की ख्याति दूर–दूर तक थी।

अंततः हम कह सकते हैं कि ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य मुख्यतः ईसाई धर्म का प्रसार था किन्तु भारत देश में 'अंग्रेजी भाषा व साहित्य' के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत कर दी गयी। ब्रिटिश हुकूमत द्वारा एक अच्छी दिशा में उठाया हुआ कदम यह भी रहा कि शिक्षा की व्यवस्था करना, राज्य के उत्तरदायित्व की सीमा में सम्मिलित हुआ जिसे कम्पनी द्वारा 1857 तक निभाया गया।

शिक्षा की दृष्टि से आधुनिक काल को हम दो उपकालों में बाँट सकते हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी काल (1700 से 1857 तक) एवं ब्रिटिश शासन (1858 से 1947 तक)। हम कह सकते हैं कि भारतवर्ष में आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भ 1510 में पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों द्वारा कर दिया गया था। प्रस्तुत लेख में यूरोप मिशनरियों से लेकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी तक आधुनिक शिक्षा के प्रयासों का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

यूरोपीय ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य

पुर्तगाली ईसाई मिशनरियां (15वीं शताब्दी)	—	गोवा, दमन व द्वीव, हुगली, कोचीन, चटगाँव बम्बई में प्राथमिक स्कूल व ईसाई धर्म की शिक्षा, प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना। 1575 — गोवा — जैसुअट कॉलेज (Jesuet College) 1577 — बम्बई (बांद्रा)— सेंट एनी कॉलेज (St. Anni College)
डच ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य (17वीं शताब्दी का मध्य)	—	व्यापारिक केन्द्र बंगाल (चिनसुरा, हुगली) एवं मद्रास (नागापट्टम, बिलीपट्टम) प्राथमिक विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी।
फ्रांसीसी ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य (मध्य 17वीं शताब्दी)	—	व्यापारिक केन्द्र माही, कारीकल, यनाम, चन्द्रनगर, पाण्डिचेरी प्राथमिक विद्यालयों में ईसाई धर्म (विशेषकर कैथोलिक धर्म) की शिक्षा दी जाती थी।
डेन ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य (17वीं शताब्दी का अन्त)	—	व्यापारिक केन्द्र सीरामपुर, ट्रावनकोर, तंजौर, चित्रमापल्ली प्राथमिक विद्यालयों में ईसाई धर्म का प्रसार व प्रचार बाइबिल का तमिल भाषा में अनुवाद, तमिल भाषा का प्रिंटिंग प्रेस बनाया गया, 50,000 भारतीय ईसाई बने।
अंग्रेज ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य 1613 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रवेश	—	भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक योगदान दिया। कलकत्ता, मद्रास, बम्बई में धर्मार्थ विद्यालय खोले गये। बंगाल प्रमुख केन्द्र था। ईसाई धर्म का प्रचार, प्रसार, विद्यालयों में शिक्षा के द्वारा दिया साथ ही दीन हीनों की सेवा के माध्यम से भी दिया गया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

हमारे देश को 1947 में अंग्रेजी शासन से पूर्णतः मुक्ति मिली। इसके बाद आधुनिक शिक्षा के विकास हेतु अनेक आयोगों एवं नीतियों की स्थापना की गयी। भारतीय संविधान द्वारा प्रत्येक भारतीय नागरिक को मूल अधिकारों के अंतर्गत शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है।

आज संपूर्ण विश्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। आज के तकनीकी युग में शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया जब 2009 में **'नो–डिटेंशन नीति'** को लागू किया गया जिसका उद्देश्य 1 से 8 तक बच्चों की निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान था। समय–समय पर शिक्षा नीतियां बनती रहीं और समयानुसार उनमें संशोधन भी हुआ है। 2020 में नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई जो कि 1986 की शिक्षा नीतियों के सुधार स्वरूप बनाई गई थी।

आज का युग तकनीक एवं विज्ञान का डिजिटल युग है। नई शिक्षा नीति में 8 स्थानों पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (A.I.) का जिक्र किया गया है जो कि आधुनिक शिक्षा (प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक) में तकनीक की महत्ता बताता है। वर्तमान में प्रत्येक छात्र को यह समझ विकसित करनी होगी कि वह प्रौद्योगिकी (Technology) का उपयोग किस प्रकार अपने ज्ञान अर्जन में करे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) छात्रों में नवीन जिज्ञासाओं का समाधान उपलब्ध कराकर छात्रों को कौशल विकास और आधुनिक रोजगार बाजार हेतु तैयार करता है जिससे शिक्षार्थी सही मायने में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

आज देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) आधारित कोर्सों का संचालन **स्नातक** (Graduation) व **परास्नातक** (Post Graduation) स्तर पर संचालित किया जा रहा है, जो कि छात्रों में महत्वपूर्ण कौशल विकास, समग्र स्वास्थ्य, जैविक जीवन, पर्यावरण शिक्षा, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (GCED) इत्यादि विषयों से सम्बन्धित ज्ञान से भलीभांति परिचित करा रहे हैं।

विभिन्न समयान्तरालों पर शिक्षा हेतु बने आयोग

→ आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ (1793)
→ मैकाले का बैटिंग का प्रस्ताव (1835)
→ ऑकलैण्ड शिक्षा नीति (1839)
→ वुड का घोषणापत्र (1854)
→ भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) (1882)
→ विश्वविद्यालय आयोग (1902)
→ कर्जन शिक्षा नीति (1904)

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

→ कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर आयोग) (1917–19)

→ सर्जेन्ट योजना (1944)

→ विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग) (1948–49)

→ आचार्य नरेन्द्र देव समिति (1952–53)

→ माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन) (1952–53)

→ राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन) (1964–66)

→ राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006–09)

→ शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009)

→ राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE)

→ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान (NCERT)

→ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968, 1979, 1986, 2020)

अद्यतन तकनीकी व प्रौद्योगिकी ज्ञान से समय–समय पर हमारे शिक्षकों की ट्रेनिंग की भी आवश्यकता है तभी सही प्रकार से शिक्षक–छात्र दोनों ही ज्ञान से लाभान्वित हो सकेंगे।

भारतीय संविधान के शिक्षा से सम्बन्धित अनुच्छेद

→ **अनुच्छेद–15** – धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध

→ **अनुच्छेद–21(क)** – शिक्षा का अधिकार

→ **अनुच्छेद–28**	– कुछ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता
→ **अनुच्छेद–30**	– अल्पसंख्यक वर्गों की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक वर्गों का अधिकार
→ **अनुच्छेद–45**	– प्रारम्भिक शैशवावस्था की देखरेख हछ वर्ष से कम आयु के बालकों की शिक्षा का प्रावधान
→ **अनुच्छेद–351**	– हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश
→ **अनुच्छेद–343**	– संघ की राज्यभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी
→ **अनुच्छेद–350क**	– प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ

भारतीय संविधान में शिक्षा से सम्बन्धित अनुच्छेदों का विवरण

अभी कुछ ही दिनों पूर्व राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा भारतीय शिक्षा एवं शिक्षण कार्य पर गहन चिंतन किया गया, जिसमें आईआईटी (IIT), आईआईएम (IIM), वाइस चान्सलर्स (VCs), एनआईटी (NIT) के डायरेक्टर एवं शिक्षा मंत्रालय से सम्बन्धित नीति निर्माता व अधिकारियों ने भाग लिया एवं अपने सुझाव प्रस्तुत किए। 'शिक्षा मंत्रालय' जिसका नाम 26 सितम्बर 1985 में बदलकर 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' कर दिया गया था जिसे एक बार पुनः परिवर्तित करके 'शिक्षा मंत्रालय' कर दिया गया है।

2016 से कराई जा रही उच्च शिक्षण संस्थानों की अखिल भारतीय रैंकिंग को वर्तमान शिक्षामंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान द्वारा 12 अगस्त 2024 को जारी किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है–

उच्च शिक्षण संस्थानों की समग्र श्रेणी में शीर्ष स्थान	उच्च शिक्षण संस्थानों की विश्वविद्यालय श्रेणी में शीर्ष स्थान
(1) आई0आई0टी0 मद्रास	(1) आई0आई0एस0सी0 बैंगलौर
(2) आई0आई0एस0सी0 बैंगलौर	(2) जे0एन0यू0, दिल्ली
(3) आई0आई0टी0 दिल्ली	(3) जामिया मिलिया इस्लामिया

कॉलेजों की रैंकिंग

(1) दिल्ली विश्वविद्यालय का हिन्दू कॉलेज
(2) मिरांडा हाउस
(3) आई0आई0एम0 अहमदाबाद
(4) सिमबायोसिस स्किल एण्ड प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी

शिक्षा मंत्रालय द्वारा उच्च शिक्षण संस्थाओं की राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) 2024 की रिपोर्ट :

NIRF रैंकिंग भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता और प्रदर्शन के मापने का साधन है जिसके आधार पर रैंक प्रदान की जाती है।

सभी वर्गों की साक्षरता दर (प्रतिशत में)

वर्ष	**सभी वर्ग**		
	साक्षरता दर	**पुरुष**	**महिला**
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	45.96	21.97
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	64.84	75.26	53.67
2011	73.00	80.90	64.60

भारत सरकार के विकसित भारत के विजन@2047 के बारे में युवाओं को संदेश प्रेरित किया गया है कि आने वाला समय भारत में आर्थिक विकास के साथ ही सुशासन, सामाजिक मजबूती एवं पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने में भी सक्षम होगा। आने वाला समय स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों से ऐसी अपेक्षा करता है कि ये संस्थान मात्र लिखने और पढ़ने के संस्थान ही न रहें बल्कि युवाओं को रोजगारपरक बनाने में एवं तकनीकी ज्ञान का प्रसार करने में अपनी भूमिका निभाएँ।

भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व की सर्वाधिक बड़ी प्रणाली है जिसमें 14.72 लाख स्कूल हैं जहाँ 25 करोड़ छात्र हैं एवं लगभग 98 लाख शिक्षक हैं वहीं उच्च शिक्षा में लगभग 4.33 करोड़ (2021–22 के आंकड़ों के अनुसार) छात्र हैं। अतः हमारा देश संपूर्ण विश्व के समक्ष एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली, परम्परा आधारित रही है जिसमें बौद्धिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए राष्ट्रानुकूल आधुनिक एवं समाजानुसार परिवर्तन हो रहे हैं। इसी दृष्टिकोण के तहत अक्टूबर 2020 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' (Indian Knowledge System) (I.K.S.) नामक प्रभाग स्थापित किया गया है जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) में है, आज न सिर्फ भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व आई के एस (I.K.S.) का पुनरुद्धार करके एवं इसे अधिक मात्रा में

व्यावहारिक रूप देकर एवं इसे अन्य विषयी दृष्टिकोण (Inter Subjective Approach) देकर समाज हेतु अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। आज आवश्यकता है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानवता, सहिष्णुता व एकता का संदेश देने वाली प्राचीन प्रणाली में नवीन शोधों का मेल करके इसे विश्व की सर्वाधिक सफल व उपयोगी शिक्षा प्रणाली बनाने में सहयोग करें क्योंकि इसमें वर्तमान युग की प्रत्येक मानव समस्याओं का समाधान अन्तर्निहित है।

वर्तमान युग नवीन तकनीक एवं आविष्कारों का युग है। हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं जिसके द्वारा आज जीवन आसान हो गया है। कोविड–19 महामारी ने जहाँ जीवन के अन्य विकल्पों का रास्ता सुझाया वहीं शिक्षा क्षेत्र को भी नवीन दिशाएँ प्राप्त हुई हैं। बदलता युग, डिजिटल युग है। महामारी काल में भारत सरकार द्वारा 'भारत पढ़े ऑनलाइन योजना' शुरु की गई थी जिससे लाखों बच्चों की शिक्षा की निरंतरता बनी रही। वर्तमान व भविष्य में भी ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव बना रहेगा किन्तु ऑनलाइन शिक्षा, स्कूली शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकती। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा स्वयं (SWAYAM), स्वयंप्रभा, मूक्स (MOOCS), विद्यादान 2.0, दीक्षा (DIKSHA) व पीएम ई–विद्या इत्यादि योजनाएँ लागू की गई हैं।

आज शिक्षा सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में AI का बोलबाला है। वर्ष 2023 में भारत आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस (ए.आई.) में निवेश के नजरिये से शीर्ष 10 देशों में शामिल था। संयुक्त राष्ट्र की टेक्नोलॉजी एण्ड इनोवेशन रिपोर्ट 2025 के अनुसार भारत ए.आई. विकास में मजबूत वैज्ञानिक उपस्थिति रखता है। सरकार द्वारा ए.आई. नवाचार को बढ़ावा देने के लिए आईआईटी हैदराबाद और आईआईटी खड़गपुर जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों में उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किए गए हैं। देश में 1.3 करोड़ से अधिक डेवलपर हैं जो ए.आई. अनुसंधान में निरंतर कार्यरत हैं जिससे अनुमानतः भविष्य का भारत शिक्षा और अनुसंधान में पूर्णतः की ओर अग्रसर होगा।

केंन्द्रीय बजट 2025–26 में 'ज्ञान भारतम मिशन' (NMM) की शुरुआत की गई थी जिसका उद्देश्य शैक्षणिक संस्थानों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों और निजी तौर पर रखी गई एक करोड़ से अधिक पाण्डुलिपियों का संरक्षित करना है। भारत में अनुमानतः 5 मिलियन पाण्डुलिपियां हैं जो संभवतः विश्व का विशालतम संग्रह है। आज जरूरत है हम सभी को अपनी पुरातन भारतीय संस्कृति (भारतीय परम्परात्मक) को आधुनिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी के साथ सामंजस्यपूर्ण तरीके से उपयोगी बनाने की ताकि हम अपने मूल्यों को जीते हुए उच्च शिक्षा को सही अर्थों में आत्मसात कर पायें।

- on, 20(2), 87-103.